अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम 2010

UN Information Centre
New Delhi

युवाओं के लिये एक आमंत्रण

संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष की स्मृति में इस वर्ष श्री राम चन्द्र मिशन भारत एवं भूटान के लिये संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित सूचना केन्द्र के साथ मिलकर अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता 2010 का आयोजन कर रहा है।

आपके लिये समर्पित वर्ष में, हम **आप युवाओं** को आगे आने और उन विषयों पर अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिये आमंत्रित करते हैं जो आत्म–परीक्षण और स्व मूल्यांकन के लिये आपको एक असाधारण सुअवसर प्रदान करने के लिये चुने गये हैं।

विषय

अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम 2010 के लिये विषय : **युवावस्था : प्रतिज्ञा एवं प्रयास का समय।**

श्रेणी 1 (कक्षा 6 से 9 तक) चरित्र जीवन की सुरक्षा करता है (शब्द सीमा : 750 शब्द)

विचारणीय बिन्दु

- पी बी फिज़वाटर ने एक बार कहा था ''चरित्र किसी व्यक्ति के विकल्पों का समुच्चय है।'' और सही ढंग से चुनाव करने का सबसे सुनिश्चित तरीका है।
- युवाकाल जीवन की एक ऐसी अवधि है जो उन प्रलोभनों से भरी हुई है जो किसी व्यक्ति की गलत और सही में अन्तर बताने की क्षमता में हस्तक्षेप करती है। चरित्र वह दीवार है जिसे युवाओं को प्रलोभनों के प्रबल प्रहारों से बचने के लिये अपने चारों ओर अवश्य ही निर्मित कर लेनी चाहिये।

श्रेणी 2 (कक्षा 10 से 12 तक) : स्वतंत्रता का अर्थ मनमानी की अनुमति नही, बल्कि स्वंय के लिए जो सही है उसे चुनने का विवेक है (शब्द सीमा : 1000 शब्द)

विचारणीय बिन्दु

- स्वतंत्रता, एक ऐसा शब्द जो बहुधा गलत ढंग से समझा गया है और पुरातन से ही पीढ़ियों के मध्य संघर्ष का मूल बिन्दु रहा है। अनादि काल से, युवा अपना रास्ता चुनने के लिये और परिवर्तन के लिये बिना शर्त की अनुमति की वकालत करते प्रतीत होते रहे हैं, और इस प्रक्रिया में वह नियंत्रण और मार्गदर्शन के महत्त्व को अक्सर कम आंकते प्रतीत होते हैं।
- क्या स्वतंत्रता को उत्तरदायित्व से मुक्त समझा जा सकता है? तब स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ क्या हैजब उसे स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व के परिपेक्ष्य में देखा जाय?

श्रेणी 3 (स्नातक और परास्नातक) : महत्वांकाक्षा (Ambition) से आकांक्षा (Aspiration) की ओर, प्राप्त करने (Acquiring) से बनने (Becoming) की ओर (शब्द सीमा : 1000 शब्द)

विचारणीय बिन्दु

- महत्त्वाकांक्षा और संग्रह करने के इसके हावी होते विषय, को एक उत्तरोत्तर भौतिकतापूर्ण संसार के एक नये आदर्श के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। 'सफलता' के लिये एक पूर्व निर्धारित व अनिवार्य वस्तु के रूप में इसने हमारे युवाओं के मन से आकांक्षा के सद्गुण को बहुत पहले ही मिटा दिया है।
- प्राप्त करने या बनने की एक सूक्ष्म परन्तु दृढ इच्छा द्वारा विशिष्ट रूप से चिन्हित, आकांक्षा मात्र सफलता के विपरीत श्रेष्ठता की खोज की वकालत करती है।
- क्या महत्त्वाकांक्षा और आकांक्षा को आत्माओं की पूर्ण रूप से विरोधी अभिव्यक्तियों के रूप में देखा जा सकता है, क्या इनके विकास करने की आवश्यकता है? तब सच्चे अर्थ में इनमें से कौन मानवीय आत्मा को परिभाषित करती है?

मान्यता (Recognition)

राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्कूल स्तर के पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

नियम और निर्देश (Rules and Guidelines)

- संस्था के सभी इच्छुक छात्र अपनी प्रविष्टियाँ स्कूल के अधिकारियों को 31 अगस्त 2010 तक दे सकते हैं। स्कूल के लिये आवश्यक होगा कि वे प्रत्येक श्रेणी से पांच श्रेष्ठ प्रविष्टियाँ चुन लें और उन्हें 20 सितम्बर 2010 को या उससे पहले सभी प्रतियोगियों की एक सूची के साथ श्री राम चन्द्र मिशन के प्रतिनिधि को सौंप दें।
- सभी प्रविष्टियों को अवश्य ही A4 साइज के कागज पर केवल काली या नीली स्याही में लिखा होना चाहिये। प्रेषित प्रविष्टियों पर कोई अंक या निशान अंकित नहीं होने चाहिये। छात्रों को किसी प्रकार के दृष्टांत देने से बचना चाहिये।
- छात्रों को विषयों को पढ़ने और उन पर शोध करने की अनुमति और प्रोत्साहन दिया जाता है। इस सबके बावजूद, सभी प्रेषित प्रविष्टियों को छात्र का अपना मौलिक कार्य होना चाहिये और उनमें दिये गये किसी भी संदर्भ या उद्धरण को यथोचित रूप से मान्य होना चाहिये।

www.sahajmarg.org

INTERNATIONAL YEAR OF YOUTH
AUGUST 2010-2011
OUR YEAR OUR VOICE